1 — 36

प्रथम अध्याय

अमृतलाल नागरजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

व्यक्तित्व : जन्म, बचपन, माता - पिता, शिक्षा, वैवाहिक जीवन, जीवन संघर्षों के अपराजित योध्दा ।

कृतित्व : कहानी सृजन के विविध आयाम - कहानी साहित्य, उपन्यास साहित्य, नाटक, जीवनी, संस्मरण, सर्वेक्षण कार्य, व्यंग्य वार्तायें । निष्कर्ष ।

व्य क्ति त्व

किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व को देखे बिना उसके साहित्य मूल्यांकन पूरा नहीं हो सकता । व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण में जन्म, संस्कार, आचरण, शारीरिक गठन, अध्ययन, मनन, चिंतन, विवेक बुध्दि, आदिपर विचार किया जाता है । व्यक्ति में भावुकता, सामाजिक आदि गुण विद्यमान रहते हैं । ये गुण व्यक्ति के आचरण द्वारा व्यक्त होते हैं । विजयेंद्र स्नातक ने व्यक्तित्व के बारे में लिखा है " सामान्यतः व्यक्तित्व शब्द के अंतर्गत हम स्थूल और सूक्ष्म दोनों प्रकार के घटक तत्वों को समाविष्ट कर सकते हैं । किसी कवि, लेखक या कलाकार का व्यक्तित्व उसकी स्थूल बाहय रुपाकृति तक सीमित नहीं होता वह उसके स्वभाव शील, गुण, क्रिया आदि सूक्ष्म चेतन तत्वों तक व्याप्त रहता है ।"[1]

साहित्यकार का व्यक्तित्व भिन्न भिन्न पहलू और विभिन्न पृष्ठभूमियों के बारीक रेशों की तानो बानों से बुना हुआ है । वह विभिन्न प्रकार के पैतृक संस्कारों को ग्रहण करके समग्रता प्राप्त कर लेता है । माता-पिता और परिवार के द्वारा बच्चों पर जिस प्रकार के संस्कार किए जाते है इस संस्कार में ही भविष्य में उन बच्चों का व्यक्तित्व आकार ग्रहण कर लेता है ।

किसी भी साहित्यकार के साहित्यानुशीलन के पूर्व उसके व्यक्तिगत जीवन, स्वभाव विशेष आदि पर प्रकाश डालना आवश्यक है । साहित्यकार की विशेषताएँ उसके साहित्य को समझने सहायक होती है । लेखक अपने सृजन के लिए सामग्री जीवन और जगत से ही ग्रहण करता है, और अपनी कृतियोंपर व्यक्तित्व की अमिट छाप डालें बिना नहीं रह सकता । और यही छाप उसे युग युग तक जीवित रखती

है । अमृतलाल नागर के साहित्य में उनके जीवन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म पहलुओं में अभिव्यक्ति पाई जाती हैं । उनके समुचे साहित्य पर उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप विद्यमान है ।

मनुष्य का जीवन गतिशील होता है । वह जीवन के अनुभवों आदर्शो एवं सिध्दातों के अनुरुप प्रगति करता है । व्यक्ति के जीवन दर्शन को समझे बिना व्यक्तित्व को हम नहीं समझ सकते । प्रतिभा संपन्न नागरने जीवन को जिस रुपमें देखा, जाना और समझा है उससे उनके व्यक्तित्व की रेखाएं स्पष्ट से स्पष्टतर होती हैं । वे एक ऐसे व्यक्तित्व संपन्न सर्जक हैं जिन के लिए जीवन जीने के कर्म की परिभाषा है, जिजीविद्या का पर्याय है । पौरुषेय प्रतिभा और गहन आस्था से मिलकर उनका व्यक्तित्व चेतन हो उठा है । लेखक का व्यक्तित्व जिस युग में विकसित होता है उस युग की परिस्थितियोंपर भी प्रकाश डालना आवश्यक है । उपर्युक्त संदर्भो में अमृतलाल नागरजी के व्यक्तित्व के बारे मेंडा. सुदेश बत्रा कहती है, -- " जीवन संग्राम के जीवंत योध्दा, उदार अलमस्त मानव, रुढ़ी मुक्त, शैव आस्तिक, घुमक्कड, बहुपठित, बहुबोली पाखी, बहुभाषा, विज्ञान जागरुक, इतिहासतज्ञ, पुराणप्रेमी, पूर्वाग्रहमुक्त प्रगतिशील, विचारक, अनुसंधित्सु, क्षेत्रीय शोधकार्य, अनुवाद, सुधी सम्पादक, कुशल अभिनेता, सफल रंगमंच निर्देशक, प्रवीण सिनेरियो लेखक, अपूर्व शैलिकार, बालसाहित्य प्रणेता और संख्या लेखों निबन्धो, संस्मरणों रेडियो नाटकों, कहानियों तथा उपन्यासों के रचयिता आदि सब मिलाकर जो व्यक्ति बनता है, उसका नाम है अमृतलाल नागर ।"[2]

नागरजीका लेखकीय व्यक्तित्व एक ईमानदार, सच्चे भारतीय लेखक का व्यक्तित्व रहा हें, साथ ही जिजीविद्या युक्त संघर्षों कठिनाईयों का साहस से

सामना करनेवाले कर्मठ आस्थाशील कलाकार का व्यक्तित्व । जीवन और समाज में उनकी अडिग आस्था रही हैं । यह ऐसी आस्था जिसके बल वे अंधकार के बीच भी उनकी राह पहचान लेते रहे हैं । डा. नागेश राम त्रिपाठी ने नागर जी के व्यक्तित्व के बारें में कहा है " नागरजीका लेखक व्यक्तित्व एक प्रतिभा संपन्न ईमानदार, कर्मठ महत्वाकांक्षी और संघर्ष में पलनेवाले कर्मनिष्ठ कलाकार का व्यक्तित्व है जिसने लेखन को सदैव एक साधना के रुपमें ग्रहण किया ।"[3]

जन्म :-

हिन्दी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार, जीवन संग्राम के जीवंत योध्दा जागरुक इतिहास पुराण प्रेमी, प्रगतिशील विचारक, क्षेत्रिय शोधकर्ता, सुधि संपादक, असंख्य कहानियां, संस्मरण, निबंध के लेखक और बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी अमृतलाल नागर जी का जन्म आगरा के गोकुल पुरा के मुहल्ले में एक अच्छे भले खाते-पीते नागर परिवार में 17 अगस्त 1916 में हुआ । उनके पिताजी का नाम पं. राजाराम जी तथा माता का नाम विद्यावतीथा । नागर के जन्म के समय चारों तरफ प्रथम विश्वयुद्ध की सरगर्मी थी ।"देश सन्नाटे की राजनीति से उबरकर कुछ करनेको मचल रहा था । ऐसे समय निति ने उन्हें यह अवसर प्रदान किया कि वे किस्सागोई के लिए जन्म ले ।"[4] इस प्रतिभाशाली साहित्यकार को उच्च आदर्शो एवं संस्कारोंवाले माता पिता एवं पितामह का संरक्षण मिला ।

बचपन :-

नागरजी का जन्म उत्तरप्रदेश के आग्रा नगरके गोकुलपुरा नामक मुहल्ले में हुआ । उन्होंने अपने बचपन के कई दिन आग्रा में ही बिताये । उस समय चारों

तरफ प्रथम विश्वयुध्द की सरगर्मी थी । इसका असर नागर के बालमन पर पड़चुका था । इसी कारण नागर. को उनके माता पिता ने घरसे बाहर जाने नही देते थे क्योंकि उनके माताजी का यह कहना था कि, नागरजी के दिलों दिमागपर बुरा असर पड़ न जाय । अंततः इसका असर यह हुआ कि, बचपन में नागरजी के कोई दोस्त नहीं बने और उनका बचपन चार दिवार में ही कैंद हो गया था । व्यक्तित्व निर्माण में पारिवारिक जीवन कें संस्कार एवं आदर्श महत्वपूर्ण होते हैं । अपने बालकाल के संबन्ध में उन्होंने स्वयं लिखा है " घर संस्कार शुध्द थे, अभिभावकोंका नियंत्रण कठोर था । मैं अपने बचपन में कभी गली सड़कपर लड़कोंके साथ खेल नही सका । पतंग मारा कुछ भी न जाना ।"[5]

बचपन में नागरजी " एक बार पिताजी के जी दस्तखात बनाकर स्कूल में अर्जी भेजनेंपर उन्हें पिता द्वारा बहुत मार पडी ' तू जालिया बनेंगा कहते जाये और मारते जाये । उस मार से मेरा अन्तर हिला उठा था और फिर यह आदत सदा के लिए छूट गयी । अब सोचता हूं, वह मार बहुत भली थी ।"[6]

नागरजी के पिताजी कभी भूलकर भी अपने बच्चों से गलत एवं गैरकानूनी बात नही होने देते थे । सन 1929 में याने तेरह वर्ष में ही उनका परिचय कवि निरालाजी से हुआ और उनके साथ भी ' सुधा ' कार्यालयों में भी आना जाना था । मिश्रबन्धु बडें आदमी थें । तीन चार बार उनकी कोठीपर दर्शनार्थ गए । रावराजा पंडित, श्याम बिहारी मिश्रने उन्ही दिनों एक उपदेश दिया जो उनके मनमें घर कर लिया । " साहित्य को टका कमाने का साधन कभी न ही बनाना । "[7] तरुणाई इस साहित्यिक माहौल का नतीजा यह हुआ कि उनकी रुचि पढ़ने लिखने में तेजी

से बढ़ती गई । घर में सरस्वती 'गृहलक्ष्मी,' 'हिन्दू पंच,' आदि पत्र पत्रिकाएं नियमित रुपसे आती थी । और इन कवियों के किताबों मे नाम देखकर उन्हे ऐसा लगने लगा कि मैं लेखक बनूंगा ।

नागरजी बचपनमें याने हायस्कूल शिक्षा पूरी करनेसे पूर्व पहले बहुत ही शरारती थे । प्रेमचंद की तरह नागरजी गणित में बहुत कमजोर थें और इस गणित से बचने के लिए उन्होंने कई कलाबाजियां की । ' पिता के अनजाने में उनके नाम से अर्जियां देकर की संस्कृत में नाम लिखा लिया तो कभी कॉमर्स में । जब उन्हें पता चला तो बडी मार पडी । "[8] कहते है, बचपन का माहौल जिसतरह हो उस तरह का असर आगे चलकर अपने जीवन में बनते बिगड़ते रह जाता है ।

नागरजीके पिता गांधीवादी विचार धारा के पोषक थे । उनके गांधीवादी विचारों, नैतिक संस्कारों एवं उच्चादर्शो का उनके व्यक्तित्व परिष्कार में अमिट योगदान रहा है । अपने पिता के सहयोग से उन्हें उंचे से उंचे आभिजात्य कुल के परिवारों को देखने और उनसे संपर्क बढाने का मौका मिला, जिस का असर आगे चलकर उनकी रचनाओं में दिखलाई पडता है । संभवत: इसी कारण डा. रामविलास शर्मा ने एक जगह लिखा है " पारिवारिक संस्कारों के कारण वे हैं बिगड़े रईस । उनके पितामह बैंक के उच्च अधिकारी थे और नागरी ने बचपन में धन का वैभव देखा था ।"[9] नवाबी सभ्यता और संस्कृति बरकरार का असर नागरजी पर गहरा पड़ा । उन्हें चार पांच वर्ष की आयुसे ही सिखाया जाने लगा कि कैसे उठे, बैठे, घुटने मोड़कर कैसे बैठे, सलाम कैसे करे, बडों का अदब कैसे करे आदि आदि । समय बितता जा रहा था । इन सारे संस्कारों, गुणों को गहण कर, चौक के माहौल, चौक की गलियों में अमृतलाल नागर बडें हुए ।

माता पिता :-

नागरजी के माता पिता एक उच्च आदर्शवादी एवं संस्कारवादी थे। पिता के स्नेहाधिक्य के कारण राजारामजी को उचित शिक्षा नहीं मिल सकी । इसलिए वह शक्य चिकित्सक बनना चाह भी नही बनें ।राजाराम नागरजी गांधीवादी विचारों को मानते थे । वे अपने माता पिता के नख्शे कदमपर चना चाहते थे । ऐसी स्थिति में नागरजी के पिता मात्र इण्टरमिडिएट तक ही पढ़ पाये । तथा उसी समय उनके माताने उन्हें डाक विभाग में जबरदस्ती भरती करा दिया । इस स्थिति का वर्णन करते हुए नागरजी कहते हैं, " क्लर्क बने सो बने । हां. उनका क्रोध बढ गया, लेकिन घर ही में । मां बाप पर क्रोध कर नही सकते थे । लेकिन नौकरोंपर, मेरी मां या मुझपर जोरसे क्रोधित होकर घर भर को शर्रा देते थें ।"[10]

नागरजी के पिताजी को तीन संतान थे उसमें सबसे बड़े अमृतलालजी, मंझले रतनलालजी और छोटे मदनलालजी थें । नागरजी के पिता के गांधीवादी विचारों, नैतिक संस्कारों एवं उच्चादर्शो का अमिट छाप उनकी संतानोंपर हुआ । इसलिए स्वर्गीय रतनलाल बड़े अच्छे कैमरा डाइरेक्टर थे, इनका संबन्ध फिल्मों से था । 4 मार्च 1996 की एक आपरेशन के दौरान उनकी मृत्यू हो गयी । और सबसे छोटे मदनलाल नागर सर्वमान्य चित्रकार है तथा कला महाविद्यालय में कला के प्रोफेसर हैं ।

"नागरजी के पिताजी अत्यन्त लोकप्रिय अत्यंत मृदुभाष हंसमुख, हाजिर जबाब और बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे ।"[11] उन्होंने पं. माधव शुक्ल के निद्रेशन में अभिनय कला सीखी थी उसी के साथ साथ श्रेष्ठ सितारवादक और संगीत प्रिय भी थे । हर नये पहलु को साकार करने की तमन्ना सदैव उनके मन में पनपती रहती

थी । दूसरी ओर नागरजी के पिता बहुमुखी प्रतिभा के धनी और हृदय से कलाकार होने के कारण उनके घर पं. माधव शुक्ल, डा. श्यामसुंदरदास, उर्दू शायर पण्डित ब्रजनारायण चकबस्त जैसे विद्वानों का आना जाना था । बचपन से ही पत्रपत्रिकाएं पढ़ने का शौक था । विविध पत्र पत्रिकाएं घर पर आती थीं । बचपन से ही इन सब का गहरा असर नागरजी पर हुआ और वे साहित्य की ओर खिंचते गए ।

नागरजी के पिताजी एक उच्च संस्कारवादी एवं उच्चादर्शो के साधक थे । और इन्ही आदर्शों ने एक दिन अमृतलालजी को बुरे काम करनेपर मार पड़ी थी । नागरजी का साहित्यिक व्यक्तित्व बनाने में उनके पितामह और पिताजी का महतवपूर्ण स्थान है और इसी संयोग से उन्हें अपना लक्ष्य मिल गया । आज वे सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों में से एक हैं पर वह आज भी अपने पिताजी और पितामह के नक्शे कदमपर चल रहें हैं । नागर मानवतावादी एवं गाँधी वादी विचारों को माननेवालों में से थे । इस विषय में नागरजी ने स्वयं कहा है ,"आन्दोलन के दिनों मुझे और मेरी मां को चरखा कातने का चस्का लग गया था । मेरे पिताजी इस कार्य से काफी प्रसन्न थे । उन्होंने मेरी माता के लिए स्वयं एक चरखा बनाया था । टूटी हुई हालत में वह हलका फुलका चरखा मैंने अबतक अपने पास सुरक्षित रख छोडा है ।"[12]

शिक्षा :-

अमृतलाल नागर जी का जीवन प्रारंभ से ही संघर्षमय रहा और वही संघर्षमय जीवन उनके शिक्षा लेनेपर पाबंदी बन गयी । इसी कारण नागरजी की शिक्षा सिर्फ दसवी तक हो गयी । पिताजी के आकस्मित मृत्यु नें उन्हें आगे शिक्षा नही लेने दिया । इस तरह नागरजी का यह ख्वाब अधूरा ही रह गया । उनको दसवी कक्षा

से ही अपनी शिक्षा छोडकर जीवन संघर्ष में कूदना पड़ा । पिताजी के मृत्यू के समय उनकी अवस्था 19 वर्ष की थी।

वैवाहिक जीवन :-

नागरजी के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में दांपत्य जीवन की भूमिका महत्वपूर्ण रही हैं । उनका विवाह 31 जनवरी 1931 को आगरा में संपन्न हुआ । उनकी पत्नी श्रीमती प्रतिभा नागरको नागरजी बाल्यकाल से ही जानते थे और वे बचपन के सखा सखी ही आगे चलकर पति पत्नी बने । प्रतिभा जी के रुपमें संस्कार संपन्न पत्नी का साहचर्य पाकर नागरजी का साहित्यिक जीवन निर्वाध चल निकला था । अपनी पत्नीका उल्लेख करते हुए नागर ने उन्हें अपनी 'खरी जीवन संगिनी' बताया है । प्रारंभिक जीवनकाल में नागरजी को प्रारंभिक संघर्षो का सामना करना पडा उस समय पत्नी हमेशा अनेक सुख दुःखों की साथी बनकर रही" । श्रीमती नागरने स्वयं कहा है -- "शुरु में इन्हें देखकर मुझे भी लिखने का शोक हुआ था, पर यह सोचकर मैंने वह छोड दिया था कि, मेरा लेखिका बनना उतना जरुरी नही था जितना इनके लेखन से मेरा सहयोग । धन वैभव से मुझे कभी मोह नही रहा । मेरी तो हमेशा यही अभिलाषा रही कि ये अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के लेखक बनें । इसलिए अनेक बार आर्थिक संघर्षों को मैंने सहर्ष झेला है ।"[13]

श्रीमती नागर आदर्श गृहिणी होने के साथ साथ एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ती भी थी । घरेलू स्त्रियों के लिए कढाई, बुनाई, सिलाई, शिक्षा हेतू उन्होंने स्कूल चलाया था । स्वयं नागरजी ने लिखा है, --" मेरी पत्नी पिछले तीन वर्ष से अपनी सी कम पढ़ी लिखी पर नए युग के उत्साह और कर्म भावनासे युक्त चार पांच अन्य महिलाओं के साथ निर्धन लड़कियों स्त्रियों को मुफत में सिलाई बुनाई वर जो आदि

काम सिखाने के लिए एक स्कूल भी चलाती है । इसी स्कूल में एक तवायफ को अध्यापक के पद पर नियुक्त कर श्रीमती नागर ने एक साहसी कदम उठाया था ।"[14] ये कोठेवालियां किताब में तवायफोंके इंटव्यूज है । यह पुस्तक नागर ने अपनी पत्नी को ही समर्पित की है । इस किताब की भूमिका में नागरजीने लिखा है, " सहयोग बहुतों का मिला पर यह सच है कि, यह पुस्तक अपनी पत्नी के सहयोग के बिना मैं न लिख पाता ।"[15]

28 मई 1985 को श्रीमती प्रतिभा नागरजी की मृत्यू हो गई । उनकी मृत्यू ने नागर और सब आत्मीय जनों को उदास सूनेपन से भर दिया है । नागरजीकी छोटी बेटी आरती पांडया नें अपनी मां के संबंध में लिखा है -- " बा, जो सिर्फ एक व्यक्तित्व ही नहीं, बल्कि ममता और स्नेह का अथाह सागर अपने अंदर समेट समस्त परिवार को एक सूत्र में बांधकर सहेज कर रखनेवाली एक ठंडी छांव थी, जिनके प्यार तले पकर, बैठकर ही जीव का परम सुख मिल जाता था । 'बा' विहीन कल्पना भी नहीं कर सकते थे हम लोग । "[16]

समग्रतः श्रीमती नागर अपने पति अमृतलाल जी की जिंदगी को अपने ढंग से सजाया और संवारा । डा. रामविलास शर्मा नेउनके घर के वातावरण को 'पंचायती' कहा है और श्रीमती नागर को नागर जी के जीवन में अडिग शिला के समान बतलाया है । नागरजी के दो पुत्र और दो पुत्रियाँ है । जेष्ठ पुत्र कुमुद नागर लखनऊ दूरदर्शन पर असिस्टंट ड्रामा प्रोडयूसर हैं । वे बालसाहित्य के लेखक भी हैं । छोटे पुत्र रसायनशास्त्र में डॉक्टरेट कर चुके हैं और संप्रति उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के सहायक सचिव के रुप में काम कर रहे हैं । उन्होंने नाटय कर्मा एवं रंगमंच समीक्षक के

रुप में । प्रतिष्ठा प्राप्त की है । जेष्ठ पुत्री श्रीमती अचलानागर बंबई में स्थित है तथा फ़िल्मों के लिए कहानियां एवं संवाद लिखति हैं । वे हिन्दी कहानी क्षेत्र में एक नई प्रति के रुप में उभर रही हैं । छोटी कन्या आरतीनेएम.ए पास करके पी.एच.डी. की है। उनका विवाह एअर फोर्स के ऑफिसर के साथ हुआ है । माता पिता के उच्च संस्कारों एवं कलाप्रियता का प्रभाव संतानोंपर पड़ा है ।

जीवन संघर्षो के अपराजित योध्दा :-

नागरजी के पितामह सेही नागर परिवार लखनऊ के चौक मुहले में स्थायी निवासी हो गया था । नागर के पिता मह एक बैंक में उच्च पदपर काम करते थें । लोग उन्हें इज्जत के नजरों से देखते थे और समाज में उनकी प्रतिष्ठा थी । पितामह के निधन के बाद नागरजीका मकान बदल गया और घरकी सारी जिम्मेंदारियां नागरी के पिताजीपर आ पडी । तब वे डाक खाते में नौकरी करते थे । उन्हे खर्चों में वे घर की सारी जरुरतों को पुरी करते थे । उसीके साथ साथ थिएटर का उन्हें बड़ा शौक था । सब कुछ इच्छा चल रहा था । इसी बीच नियति ने उन्हें पिताजी से हमेशा के लिए अलग कर दिया । फरवरी 1935 को बाबूजी ने आत्महत्या कर ली कारण बतलाया,"मेरी लगन भगवान में लग गई है .... उन्हीं के दर्शन के इच्छा से मैं प्राण त्याग रहा हूं ।[17] इस घटना को नागरजी को अंदर से हिलाकर रख दिया ऐसा लगा जैसे नीचे से जमीन खिसक गई है । अनिश्चितताके माहौलने 19 वर्ष की आयु से एकाएक उन्हें 40 वर्ष का बना दिया । छोटे भाईयों का दायित्व उनके कन्धोंपर आ गया । साथ में अन्धी दादी थी । मॉ थी, पत्नी थी । दादी भी 1936 में चली । पिताजी की आत्महत्या ने नागरजी को जीवन की हरियाली से सीधे रेगिस्तान

की तरह, जिसपर चिलचिलाती धूप में अब उन्हें एक लंबा सफर तया करनाथा । अब नागरजी के सामने एक दूसरा लखनऊ था । बाबूजी की छत्र छाया में वे निश्चित होकर लखनऊ को जी रहें थे । अब लखनऊ उन्हें जीने लगा । लेकिन इन लखनऊ नें उन्हें मजबूत किया । समाज के सामने ठोक-पीटकर एक चटटान को खाड़ा किया। । पिताजी की आकस्मित मृत्यू के फल स्वरुप जीवन के प्रभात काल में ही उन्हें पारिवारिक दायित्व भी वहन करना पड़ा । अर्थाभाव के कारण उन्हें जीवन में पग पगपर संघर्ष करना पडा । साथ ही परिवार का भरण पोषण करने के लिए नौकरी भी करनी पड़ी । इन्होंने सन 1953 में 'ऑल इंडिया युनायटेड इश्योरिस कंपनी' के लखनऊ कार्यालय में 18 दिनों तक डिस्पेचर का काम किया । अफसर के साथ मतभेद होने के कारण सहज स्वाभिमानी नागरजी ने आर्थिक परेशानियोंसे जूझना स्वीकार किया पर अफसर के सामने झुकना नही स्वीकार किया । इस तरह अपने जीवन संग्राम में आनेवाले हर कठिनाईयों एवं संघर्षो को अपने में समेटापर उन्होंने हार नहीं मानी । अपने माता पिता कें संस्कारों को याद कर उन्होंने जीवन में आगें बढ़ना चाहा ।

लेखन कार्य के प्रति निष्ठा और साहीत्यिक रुचिके कारण नागरजी ने सदैव स्वतंत्र रुपसे साहित्य सृजन करना चाहा । परंतु आर्थिक कारण उसमें अवरोध बनते रहें । पत्र पत्रिका से उन्होंने अपना साहित्यिक जीवन आरंभ किया । निराला जी के सम्पर्क से उनकी मित्रता डा. रामविलास शर्मा, शरतचंद्र और जयशंकर से हुई जिन्होंने आरंभिक दिनों में नागरजी को संम्बल मिला । जयशंकर प्रसाद जी के विषयमें नागरजी ने कहा है - " प्रसादजी से मेरा केवल बौध्दिक संम्बन्ध ही नही, हृदय का नाता भी जुड़ा हुआ है । महाकवि के चरणों में बैठकर मैंने साहित्य के संस्कार भी पाये हैं , दुनिया दारी का व्यवहारीक ज्ञान भी ।" [18]

नागरजी का आरम्भिक साहित्यिक जीवन संघर्षशील रहा । लेखन के क्षेत्र में नये लेखक की कठिनाईयां नागरजी को भी झेलनी पड़ी । नागर ने स्वयं लिखा हैं, " कहानियां लिखता गरुजनों से पास भी करा लेता, परन्तु हां कहीं उन्हें छपने भेजता, वे गुम हो जाती थी । रचना भेजने के बाद मे दौंड दौड कर पत्र पत्रिकाओं के स्टाल पर आतुरता के साथ यह देखने के लिए जाता था कि मेरी रचना छपी है या नही । हर बार निराशा ही हाथ लगती । मुझे बडा दुःख होता था । उसकी प्रतिक्रिया में कुछ महिनों तक मेरे जी में ऐसी सनक समाई कि लिखता, सुधारता, सुनाता और फिर फाड डालता ।"[15] ऐसी स्थिति में आर्थिक अभाव के कारण परिवार की स्थिति सुधारने के लिए सन 1940 में फिल्म संसार से नाता जोड़ा । सन 1940 से 1947 तक उन्होंने किशोर साहू और महेश कोल जैसे फिल्म निर्माताओं एवं निर्देशकों के साथ रहकर कोल्हापूर, बम्बई तथा मद्रास के फ़िल्म क्षेत्र में काम किया । नागरजीने स्वयं लिखा है " सन 45 में दो फिल्मों के संवाद लिखने के वास्ते मद्रास गया था। लगभग पांच महिने वहाँ रहा । मेरी वह दक्षिण भारत यात्रा मेरे दो उपन्यासों से ऐसे जुड़ गयी है कि उसे भूल नही सकता ।"[20] परतु यह फिल्मी जीवन नागरजी को पूर्ण रुपसे प्रभावित न कर सका और फिर नागरी बम्बई से लखनऊ लौटने के बाद रचनात्मक संघर्ष में फिरसे जुट गए ।

शरदतचंद्र, जयशंकर प्रसाद और रामविलास शर्मा जैसे लोगोंने नागरजी को लिखने के लिए प्रेरित किया एवं उनमें जोश पैदा किये । उनके साथ साथ महत्वपूर्ण सहयोग उनकी पत्नी श्रीमती नागरजी को मिला । वह अपने पती के साहित्यिक जीवन में एक शिला बनकर रही । " एक साहित्यकार को पत्नी भी ऐसी मिली जो उनके

सृजन की पोषिका और सहयोगिनी रही, बाधा नही ।"[21] सन 1935 में उन का पहला ' वाटीका ' नामक कहानी संग्रह प्रकाशित हो गया । इस तरह नागरजी ने साहित्यिक क्षेत्र में अपने पैर जमाये । जीवन संघर्षो से लड़ते लड़ते यह अपराजित योध्दा अपने साहित्यिक जीवने में सफल हो गया । आज इनका नाम श्रेष्ठ साहित्यकारों में लिया जाता है ।

कृतित्व :-

मौलिक प्रतिभा तथा सूक्ष्म पर्यवेक्षण- शक्ति सम्पन्न, गहन जीवन द्रष्टा, नागरजी की साहित्य और कला की विविध विधाओं में रुचि आरंभ से ही रही है। । उनके बहुमुखी व्यक्तित्व की तरह उनका कृतित्व भी वैविध्यमय होकर सामने आया हैं । अमृतलाल नागर हिन्दी के उन गिने चुने मूर्धन्य लेखकों में हैं, जिन्होंने यद्यपि कम लिखा है , परंतू जो भी लिखा है वह साहित्य की निधि बन गयाह है । " सभी प्रचलित वादों से निर्लिप्त उनका कृतित्व और व्यक्तित्व कुछ अपनी ही प्रभा से ज्योतित है । उन्होंने जीवन में गहरे पैठकर कुछ मोती निकाले है और उन्हें अपनी रचनाओं में बिखेर दिया है । "[22]

लेखक के रुपमे नागरजी सम्पादक, पत्रकार, सिनेरियों लेखक, पटकथा एवं संवाद लेखक, नाटककार उपन्यासकार, कहानी कार, बालसाहित्य प्रणेता तथा असंख्य लेखों निबंधो संस्मरणों के लेखक, व्यंग्य वार्ताकार तथा अनुवादकर्ता के रुपमें सामने आते हैं । नागर के इन विविध साहित्यिक रुपोंने उनके कथाकार व्यक्तित्व को निखारा और संवारा है । यद्यपि नागरजी का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुमुखी हैं

। डॉ नागेश राम त्रिपाठी के अनुसार ' अमृतलाल नागर हमारी संस्कृति के बहुरंगी आयामोंसे परिचित ऐसे लेखक हैं जिन की कृतियां साहित्य और समाज शास्त्र के अध्येयताओं के लिए बराबर रोचक और मूल्यवान बनी रहेंगी ।"[23]

हिंदी साहित्य में अमृतलाल नागरजीने भोगे हुए, जिये हुए और अपने आस पास के अंशोंको अपने साहित्य में स्थान दिया है । उन्होंने उपने साहित्य में स्वातंत्र्यपूर्व भारत, संघर्षकालीन भारतीय समाजपर पाश्चात्य प्रभाव एवं लखनऊ नगर की मुस्लिम सभ्यता के विविध रंग ज्यों को त्यों उतार दिए हैं । नागरजी एक प्रतिभा संपन्न कथाकार रहे हैं । उनकी कृतियों में भारत के समाज, इतिहास और संस्कृति की छबियां उजागर हुई हैं । प्रेमचंद की तरह नागरजी का साहित्य विशाल एवं विस्तृत है ।

साहित्य सृजन के विविध आयाम :-

अमृतलाल नागरजी का साहित्य विविध मुखी है । जिस कलाकार की अभिरुचियां विविधवर्णी रही हो, उसका सृजन एक ही दिशा में कैसे हो सकता था । मेरी धारणा है कि नागरजी का विविधात्मक सृजन जिस रुपमें उपलब्धहै, उसकी पहचान का दायरा सिमटता गया है । इनकी विविधमुखी साहित्यों मेसे हम पहले कहानी साहित्य की ओर बढेंगे ।

कहानी साहित्य :-

नागरजी का कहानी साहित्य भी उपन्यास की तरह विस्तृत हैं । उन्होंने अपने जीवनकाल में प्रेमचंदकी तरह विस्तृत साहित्य की निर्मिति की है ।

अमृतलाल नागरजी ने अपनी कहानियों के संबध में लिखा है - " मेरी ये रचनायें जीवन के यथार्थ बोध से निःसंदेह जुड़ी हुई हैं । "[24] नागरजी की कहानियां और उनके कहानी विषयक वक्तव्य प्रमाणित करते हैं कि वे कहानी को यथार्थ की प्रतिकृति मानते हैं । वे कहानी लिखने के लिए नहीं लिखते । उनके अनुसार कहानी का शिल्प हर स्थिति में उनके कथ्य से प्रेरित और पुष्ट होना चाहिए यदि वह आरोपित होगा तो कहानी की सत्ता ही अविश्वसनीय प्रतीत होगी । उनकी कहानियां इसकी गवाही देती है । उनके कहानी संग्रह निम्नलिखित हैं --

1.	नवाबी मनसद	1939
2.	तुलाराम शास्त्री	1941
3	एटम बम	1956
4.	पीपल की परी	1962
6.	हम फिदा ए लखनउ	1978
7.	मेरी प्रिय कहानियां	1972
8	पांचवा दस्ता और सात कहानियां	1970
9.	भारतपुत्र नोरंगीलाल	1971
10.	सिकंदर हार गया	1973

1. **नवाबी मसनद** :-

नवाबी मसनद इस कहानी संग्रह का प्रथम प्रकाशन सन 1939 में हुआ । लेखक ने नवाबी मसनद इस कहानी संग्रह में कुल 21 कहानियां का

संकलन किया है । यह नागरजी की हास्य व्यंग्य शैली की मूलभूत विशेषता है । एक तरह से यह विशेषतः उनक प्रकृति में गुंथी हुई है । ' नवाबी मसनद' हास्य व्यंग्यपूर्ण रेखाचित्रों का धारा प्रवाह निबन्ध है । सह, सरल उर्दू भाषा में खींचे गये ये रेखाचित्र निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज की भाषाशैली व्यवहार, वातावरण सामान्यज्ञान का सजीव चित्र अंकित करते हैं । प्रायः नवाबी जीवनपर किय जानेवाले व्यंग्य वातावरण की सजीवता में विशेष सहायक है । उर्दू की सहज बोलचाली भाषा का प्रवाह नवाबी दरबार के दृश्यों को चित्रित करता है ।

इस संग्रह में चित्रित 'नवाब साहब' इस कहानी के अंतर्गत नागरजीने लखनऊ के परिवेश की पृष्ठभूमि में वहां की संस्कृति और मिठास को प्रस्तुत किया है । नवाबी संस्कृति लखनऊ की एक प्रमुख विशेषता है और स्वयं को नवाब वाजिद अली शाह का परपोता बनानेवाले नवाब साहब की खुश गप्पियों पर लेखक ने नहलेपर दहला चढ़ाकर हास्य का एक अनोखा रंग चढ़ा दिया है । नागरजी की इस हास्य व्यंग्यता पर डा. रामविलास शर्मा लिखते हैं " यों लोग अछूती कलाके उपासक हैं, उनका तो कहना ही क्या ? यथार्थ कल्पना के अद्‌भुत सम्मिश्रण से उत्पन्न हास्य की व्यंजना निःसंदेह उनके कला विकारों की शान्ति का साधन होगी । "[25] इस कहानी संग्रह द्वारा अमृतलाल नागरजीने लखनऊ के नवाबी सभ्यता को जीवित रखने की कोशिश की है । 'तस्लीम लखनवी' के नाम से लिखित 'नवाबी मसनद' नाम एवं स्थायी स्तंभ के रेखाचित्रकें लेखक के रुपमें नागरजीका इससे प्रथम सर्जनात्मक परिचय मिलता है ।

2. **तुलाराम शास्त्री :-**

अमृतलाल नागर की प्रस्तुत कहानी संग्रह का प्रथम प्रकाशन सन 1955 में हुआ । यह उनकी मध्यवर्गीय लोगों के जीवनपर आधारित मार्मिक तथा हास्य व्यंग्य की रचना है । लेखक ने प्रस्तुत कहानी संग्रह में मनोविश्लेषणात्मक तथा नाटकीयता का प्रयोग किया है । नागरी ने इस संग्रह के कहानियों के प्रारंभ हर्षवर्धक आकर्षक एवं कलापूर्ण ढंग से किये हैं । जैसे " कल तो जनाब वो हंगामा मच गया कि उफ । उफ । अजी पूछिये मत । वह तो कहिये कि खुदाने कुछ नर बंदी से बचा ही लिया मौके पर हम नथे वरना तलवारों पर मूठे ही बचती या धडों पर सिर ही सलामतियां मनाने नजर आते । "[26] इस तरह नागरी ने प्रस्तुत संग्रह की कहानियों में विविधवर्णी भाषा प्रयोग किया है ।

नागरजीने अपनी रचना परिधि में कुल्फीवाला, सब्जी वाला, अस्तप्राय: नबाब, फटेहाल डाक्टर आदि पात्रों के साथ सम्पर्क में आनेवाले हर व्यक्ति के बहुरंगी रुप को समाहित किया है । नागर. ने 'जुलाब की गोली' इस कहानी के अंतर्गत रसिक समाज का वेश्या प्रेम और लखनऊ की आशिक मिजाजी का एक पुरातन दृश्य का चित्रण किया है । 'छापे के हुरुफ' इस कहानी में लेखकने अवधी भाषा का प्रयोग और कथानक की नाटकीयता एवं संवादों की हास्यजनक चटुलता का प्रयोग किया है ।

मुंशी धिर्राऊलाल ' इस कहानी के अंतर्गत लेखकने हास्य और गप्पबाजी का सुन्दर चित्र खींचा है । नागर के इसी हास्य एवं गप्पबाजी के बारे में डॉ. सुदेश बत्रा कहती हैं " वे परिस्थितियां गढ़ते नही स्वयं ही ऐसे व्यक्तित्व पुरानी डींगे हांकने

और पुराने जमाने के नवाबों काठाठ, अन्त में उनकी निहायत बोसींदा स्थिति को स्पष्ट कर देते है ।"[27] 'तुलाराम शास्त्री' इस कहानी में लेखकने दैनंदिन जीवन के अनुभवों को प्रस्तुत किया है जिसमें लेखक के परिवार के सदस्य एवं निजीजीवन सी एक किसा बनकर सामने आयाहै ।

इसतरह नागरजीने प्रस्तुत कहानी संग्रह द्वारा समाज के अनेक पहलुओं एवं समस्याओं का अंकन कर से दर्शनिक पृष्ठभूमिपर रखने की कोशिश की है ।

3. **एटम बम :-**

नागर की 'एटम बम' इस कहानी संग्रह का प्रथम प्रकाशन सन 1955 में हुआ । यह नागरजी की 11 कहानियों का संकलन है । नागर का ये राजनितीक पृष्ठभूमिपर आधारित कहानी संग्रह है, जो यथार्थ में सत्य है ।

इस संग्रह में चार प्रकार की कहानियां पाईजाती हैं । पहले प्रकार की कहानियां वे हैं जिनमें मनुष्य के भीतर मानवता को जाग्रत करने का प्रयत्न किया है । एटम बम, 14 एप्रिल, एक था गांधी, आदमी नहीं ! नहीं !! और 'जय पराजय' ऐसी ही कहानियां हैं । इनमें लेखक ने विज्ञान के विनाशकारी रुप और साम्प्रदायिकता एवं रंग भेद के विरुध्द अपनी आवाज बुलंद की है । "राजनिती के क्षेत्र में जहां उसका ध्यान जयध्वनियों की दिशा में गया है वहा ऐसे प्राणियोंके असीम दुःख और मुब बलिदान के मुल्यं को भी उसकी आत्मा ने पहचाना है । जिसपर किसी की दृष्टि सहसा नही पडती ।"[28] दुसरे प्रकार की कहानियां अन्धविश्वास पर गहरा आघात करती हैं ।

उदाहरण के लिए 'जंतर-मंतर' और 'मरघट के कुत्ते' शिर्षक कहानियों को हम ले सकते हैं । अनपढ़ जनता आज भी कुछ लोगों की धूर्तता और असामाजिक कृत्यों का किस प्रकार शिकार होती रहती है । यह इन कहानियों में स्पष्ट कर दिया है ।

तीसरे प्रकार की कहानियों में थोडा मानवता का पुट है । ' बेबी की प्रेम कहानी ' में बच्चों के बीच विकसित होनेवाले कोमल भावनापर लेखक की दृष्टि गई हैं इसी भावूकता आगे चलकर हानिकारक भी सिध्द् हो सकती है । दूसरी कहानी ' सूखी नदियां 'में यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि आधुनिक प्रेम कितना कृत्रिम उथला और सारहीन होता है । चौथे प्रकार की कहानियों में व्यंग्यस्थान जादह हैं । इनमें डा. 'फरनीचर पलट,' और 'क्लार्क ऋषी का शाप' में आती हैं । इस तरह लेखक ने इस प्रकार को चार भागों में विभाजित किया हैं ।

4. **हम फिदा ए लखनऊ :-**

अमृतलाल नागरजीने प्रस्तुत कहानी संग्रह में लखनऊ की विशिष्ट संस्कृति में रंगे जन जीवनपर आधारित रोचक कहानियां लिखी है । प्रस्तुत कहानी संग्रह में कुल 14 कहानियां संकलित हुई हैं । इस कहानी संग्रहका प्रथम प्रकाशन 1963 में हुआ । इसमें नागरजीने लखनऊ के परिवेश पृष्टभूमिमें वहां की संस्कृति और आचार-विचारों का चित्र खींचा है । लखनवी भाषा अपनी नज़ाकत और मिठास के लिये प्रसिध्द है । इसी मिठास की नजाकत की आड़ में लखनव गप्पों की उडानों काआयजा किया गया है ।" [29]

'पीपल परी की दास्तान' एवं 'दफीने की खुदाई' इन कहानियों द्वारा नागरजीने अन्धविश्वासों एवं रुढ़िवादी लोगों का चित्रण किया है । इस के अंतर्गत लेखक ने मनुष्य की सहज प्रवृत्ति एवं भारतीय समाज की धार्मिक मनोभूमि और अन्धविश्वासों पर कहानियों को खड़ा किया है । यहां पर हर जति अपनी हर इच्छा को भगवान की इच्छा मान लेती है और फिर धार्मिक ठेकेदारों की दास बन जाती है चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान । धर्मभीरु सामान्य व्यक्ति विना किसी तर्क के उस अफवाहों पर विश्वास कर लेता है । हाजी कुल्फीवाला, नजीर मियां, बनफशा बेगम के नूरे नजर , जुलाब की गोल, जन्तर मन्तर आदि कहानियों में लखनऊ के परिवेश का ही जीवंत चित्रण हुआ है ।

अमृतलाल नागरजीने उन लोगों का जिक्र किया हैं जो नारी को [illegible] हैं दूसरी ओर लखनवी वेश्याओंका भी विवेचन किया है जो इस परम्परा को कायम रखने की कोशिश करती हैं । 'जुलाब की गोली' इस कहानी में लखनवी रसिक समाज का वेश्या प्रेम और लखनऊ की आशिक मिजाजी का पुरातन दृश्य मिलता है। स्वतंत्रता पूर्व भारतीय समाज विशेषतः लखनऊ मुस्लीम समाज एक ओर कोठेवालियों के पास जाता था । दुसरी ओर घरवालियों का गुण गाता था । इसका चित्रण नागरजीने प्रभावशाली ढंगसे किया है ।

5. पीपल की परी :

अमृतलाल नागरजी का सन 1962 में प्रकाशित ग्यारह कहानियोंकी संग्रह हैं। इसमें सग्रहित 'पीपल की परी' इस कहानी के नाम से प्रस्तुत कहानी संग्रह

का नामकरण किया है । इस संग्रह में चित्रित कहानियों द्वारा नागरजी ने लखनवी समाज के हर अंग को छूने की कोशिश की है । उसकी हर संभावित समस्या को सामने उठाकर रखने की कोशिश की है ।नागरजीने इन कहानियों द्वारा अन्धविश्वास, आडंबरो, अत्याचार एवं विसंगतियों को ढूंडकर समाज के सामने सच्चाई स्थापित करने की है । लेखक ने समाज के हर पहलु को अपने अनुभवों से यथार्थ बना दिया है। । नागरजी को शब्द शिल्प के बारे में डा. सुदेश बत्रा लिखती हैं; " नागरजी शब्द शिल्पी हैं । अपने आस पास के माहौल से कुछेक चित्र उठाकर उन्हे स्वयं बनाने की कला नागरजी के पास है । उन्होंने इसी कला के सहारे अपनी कहानो संसारको विकसित किया है ।"[30] नागरजी एक तरफ उन लोगों का जिक्र करते हैं जो समाज के लिए एक सबक बन जाते हैं । उसका चित्रण 'हाजी कुल्फीवाला' इस कहानी में किया है । इसमें कुल्फीवाला ईमानदार है, उसकी मेहनत में सच्चाई है, और दूसरी वे लोग हैं जो समाज के लिए कलंक साबित होते हैं । इसका जीता जागता उदाहरण है 'खटकीन भाभी'। इस कहानी में स्वरुपचंद जैसे लोगों को लेकर नागरजी कुंठीत दृष्टी और वातावरण का चित्रण करते हैं । नागरजी ने कुल्फीयों जैसे सामान्य विषय को उसकी व्यावहारीक विशेषताओं की बारीकियों के साथ जीवन की सतत गतिशिलता का परिचय देते हैं ।

'दफीने की खुदाई' इस कहानी द्वारा इस कहानी द्वारा नागरजी ने उनलोगोंपर व्यंग्य कसा है, जो अन्धविश्वास, रुढ़ियोंपर आस्था रखते हुए उसे सर्वोपरि मानते हैं और वही धर्म एवं जात में अफवाहों के सहारे विसंगति निर्माण करते हैं । मनुष्य अपनी इच्छा पूर्ति के लिए दोनो धर्मो के आचारोंको को अपना सकता है और दोनों

धर्मों के अनुयायी अपने अपने ईश्वर की शक्ति स्थापना की होड में परस्पर सहानुभूति खो बैठते हैं । नागरजीने इस कहानी संग्रह द्वारा सामाजिक विसंगतियों एवं कई समस्याओंसे सुलझाने की कोशिश की है ।

6. कालदण्ड की चोरी :-

नागरजी की प्रस्तुत कहानी संग्रह का प्रथम प्रकाशन सन 1963 में हुआ । यह उनका हास्य व्यंग्य से आल्पावित कहानी संग्रह है । लेखक ने इसमें स्वातंत्रतापूर्व भारतीय तथा स्वातंत्रोत्तर कहानियों का संकलन किया है । इसमें उनकी काल्पनिक कहानियां । सम्मिलित हुई है जो अपने विचारो तानो बानों से बुनाई गयी हैं । नागरजी ने कालदण्ड की चोरी कहानी के नाम से प्रस्तुत कहानी संग्रह का नामकरण किया है लेखक ने प्रस्तुत कहानी संग्रह मे धार्मिक एवं मनोरंजन प्रधान कहानियां लिखी है, जो पाठकों का मन जीत लेती हैं ।

अमृतलाल नागरने कई कहानियों का सृजन लम्बी कहानियां लिखकर किया है । वस्तुतः कहानियां लम्बी नही होनी चाहिए क्योंकी इंसान कम से कम समय में मनोरंजन एवं रुचि सम्पादन करना चाहता है । लेकिन नागरजीने अन्य कहानियों की तरह इस संग्रह में भी लम्बी कहानियां लिखी हैं, परंतू उनकी कहानियों लम्बी होकर भी हास्य व्यंग्य, जासूसी तिलस्मी एवं गप्पबाजी के तानों बानों के कारण मनोरंजन एवं रोचकता स्थापित करती हैं । इस संग्रह की कहानियां पढ़कर पाठक एक जग मुस्कुराता भी है और दुखी भी बन जाता है । 'कालदण्ड की चोरी' यह हास्य व्यंग प्रधान के साथ साथ एक लम्बी कहानी भी है जो कल्पनिक है । शुध्द मनोरंजन दृष्टिसे लिखी गई इस कहानी की कल्पना वाकई बड़े मजेदार है ।

7. **मेरी प्रिय कहानियां :-**

इस कहानी संग्रहमें नागरजी की कुछ प्रिय कहानियां संकलित हुई है । यह संग्रह सन 1970 में प्रकाशित हो गया । नागर की यह कहानियां स्वातंत्रपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तरकालीन हैं, जो राष्ट्रीय एकात्मता के भावनाओं को उजागर करती हैं । नागरजी ने स्वातंत्र्यपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर लखनऊके निम्नवर्गीय मुस्लिम समाज का दरिद्रता को अंकन कर उसे निखारा भी है , और संवारा भी है । इस संग्रह द्वारा समाज में चित्रित हर अंग को नागरजीने दार्शनिक पृष्ठभूमिपर रखने की कोशिश की है । एक तरफ नागरजीने उन लागों का जिक्र किया है, जो समाज का एक अहम हिस्सा बन गया है । शिक्षित होकर भी बेरोजगार के जाल में किसतरह फंसे हुए है कि जो गृस्थका दायित्व एवं रोजी रोटी के लिए तरस रहे हैं । अंततः वे लोग अपना संयम खो बैठते हैं और गोरख धन्धे करनेपर मजबूर हो जाते हैं ।

नागरजी इस संग्रह द्वारा समाज के साथ साथ सारे विश्व का भी विचार करते हैं । उनके 'एटम बम' कहानी में हिरोशिमा नागासाकी जैसे शहरोंपर अमरिका द्वारा बम डालकर सामूहिक संहार करना मानवीय इतिहास की नृशंस घटना है । यह कहानी नागरजी की संवेदना प्रधान मानवता का गहरा स्वर प्रस्तुत करती है ।"अमृतलाल नागरने अपन्यासों की तरह कहानियों भी कम लिखी है, परंतू सभी कहानियां उनकी अपनी विशिष्ट जीवन दृष्टि और सहज मानवीय संपत्ति हैं ।"[31] लेखकने 'आदमी जाना अनजाना' कहानी द्वारा मानवता की डोर से हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति को बरकारार रखने की कोशिश की है । 'धर्मसंकट' इस कहानी में लेखक ने भारतीयों पड़नेवाले अंग्रेजी प्रभावमें उनकी मनस्थितियाँ परिवर्तित, रुढ़ियाँ नारी की स्थिति, सामाजिक न्याय इन समस्यों का समाधान किया है ।

8. **पांचवा दस्ता और अन्य सात कहानियाँ :-**

नागरजीकी प्रस्तुत कहानी संग्रह का प्रकाशन सन 1970, में हुआ। । यह नागरजी का सबसे बड़ा कहानी संग्रह है । इस कहानी संग्रह द्वारा लेखकने लखनऊ के हर अंतरंग को पहचान ने की कोशिश की है और इस रंग के बारे में उन्होंने स्वयं लिखा है " आदमी अपने माहौल से जुदा होकर कुछ । नही । वह जिस जगह रहता है वहां की आबों हवा , कुदरत के नजारे वहां का इतिहास, रिति रिवाज, रहन सहन सब कुछ जाने अनजाने तौरपर उसके जीवन का अंग बन जाता है वह उससे अपने को अलग करके रह ही नही सकता ।" [32]

नागरजीने 'बंदिनी' कहानी द्वारा नारीपर होनेवाले अत्याचारों का चित्रण किया है । कहानी की नायिका कुंती के माध्यम से संपूर्ण नारी जाति की विवशता तथा करुणा मूर्तहोउठी है । कुंती ऐसी असहाय और विवश नही है जो अपने पति परमेश्वर द्वारा ही बंदिनी बना दी जाती है । उसका पति उसे घर के कमरे में बद करके चला जाता है । उसका सोचना युग युग से अपमानित नारी का आक्रंदन बन जाता है । वह कहती है --

" जन्म से पुरुष का, परिस्थितियों का दासत्व भोगनेवाली नारी का जीवन भी भला कोई जीवन है ।" [33] 'नाश और निर्माण' इस कहानी में लेखकने वातावरण निर्मिती की और ध्यान दिया है । उसी के कारण उनकी कहानियों की घटनाएं एवं पात्र वास्तव लगते हैं । अमृतलाल नागरजीने प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियों में सहज स्वाभाविक और बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है । उनकी कहानियों में

में भाषा का यथार्थ रुप मिलता है, जिसमें बोलचाल के शब्दों और मुहावरों तथा अन्य जनवादी तत्वों को मिलाकर भाषा को यथार्थ, स्वाभाविक, सजव एवं प्रभावशाली बनाने का प्रयत्न किया है । इस प्रकार की भाषा के अनेक उदाहरण दिये जा सकते है जैसे, ' ऐ छोड़ मुए बदात हरामी के । ऐ तेरी जवानी को लकवा मारे सैतान के बच्चे । आतो सही । गली में इस जनान चीख चिल्लाहट के साथ घर पटक धमाले की आवाजे आई ।"[34] एक दिल हजार दास्ता ' इस कहानी के अंतर्गत मानवताका चित्रण किया है । ' मानवतावाद ' नागरी के जीवन दर्शन का मूलाधार है । उन्होंने स्वयं लिखा है -- " हर औरंत हरत महल या लक्ष्मीबाई बन नहीं सकती उसी तरह हर मर्द महात्मा गांधी नहीं बन सकता । हमें इंसान को उसकी कमजोरियों के साथ प्यार करना चाहिए । कमजोरियां न हो, तो इंसान इंसान न रहें ।"[35]

" पांचवा दस्ता और अन्य सात कहानियां ' यह नागरजी की राजनीतिक समस्या पर आधारित कहानी संग्रह है, इसके अंतर्गत 'पांचवा दस्ता' शीर्षक कहानी के अंतर्गत युध्दों का वर्णन है । इस कहानी का पात्र तारा युध्द का विरोध करती हुई कहती है " तब फिर सब राष्ट्र मिलकर यह क्यों नही मान लेते कि किसी दूसरे तरीके से सब बातों का निबटाना करना चाहिए । ये फौज फलटन और बमों का तरीका सदा के लिए नापास कर दिया जाय ।"[36] लेखाक ने इस संग्रह में राजनीति के साथ साथ मनो विशलेषणात्मक एवं हास्य व्यंग्य पूर्ण कहानियां का चित्रण किया है ।

9. **भारतपुत्र नौरंगीलाल -**

अमृतलाल नागरजी प्रस्तुत कहानी संग्रह में कुछ 16 हास्य व्यंग्य की रचनाएं सम्मिलित हैं । लेखाक ने 'भारतपुत्र नौरंगीलाल' इस कहानी के नाम से

प्रस्तुत कहानी संग्रह का नामकरण किया है । इस संग्रह के अंतर्गत लेखक की नई कहानियां के अतिरिक्त पुरानी कहानियां भी ली गई है, जो अपने समय में चर्चा का विषय रही थी परंतु अब अप्राप्य थी । यह हास्य व्यंग्य की रचनाएं पाठकोंको स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करता है ।

यह नागरजी का सामाजिक कहानी संग्रह है । लेखकने इस ग्रंथ इस संग्रह द्वारा समाज के अंदर छिपी हुई हर समस्या को उजागर करनेकी कोशिश की है । 'कयामत का दिन' इस कहानी द्वारा नागरजीने समाजमें फैले हुए अन्धविश्वास एवं रुढियों का चित्रण किया है । अन्धविश्वास एवं रुढ़ियां किस तरह मनुष्य को मूर्ख और बदहवास बना देती है इसका चित्रण किया है । वे समाजके उन व्यक्तियों को बचाना चाहते है, जो आडंबरो अन्धविश्वासों रुढियों एवं समस्याओं के नीचे दबाए हुए है । 'श्री कथा बाप बेटे की' इस कहानी में दैनंदिन जीवन का विवेचन किया है । इसमें बाप बेटे और बेटा बाप से सवाया होकर जी रहें हैं । दूसरी तरफ वे लोग है, जो अपने बच्चों को दिलों जानसे समोहब्बत करते है । 'मायामोह' इस कहानी का पात्र है ' श्यामकल देवी उनकी बेटी कानी रहकर भी वह उसकी एक आंख बनकर रहना चाहती है ।

नागरजी के सबसे निचले स्तर तक पैठने और अप्रत्याशित बीभत्सता का उद्घाटन करने में अद्वितीय है । इसमें जादातर कहानी हास्य व्यंग्य एवं गप्पियों से उन्मुक्त है जो पाठकों में रुचि पैदा कर देती हैं । वे समाज के उन लोगों को दोषी ठहराते हैं कि जो जानवरों को पालने में शौक रखते हैं इंसान को नही । 'लंगूर का बच्चा' इस कहानी के शिक्षित पात्र जो घी तेल में मिलावट की जांच करनेवाला

इन्स्पेक्टर है । वह पार्शियन कैट से सएक बिजली लाता है और उसे ऐशोअराम की हर चीज खिलाता और पिलाता है जो इन्सान को अक्सर नही मिल पाती । यहां पर नागरजीने उन लोगोंपर व्यंग्य कसा हैं, जो लोग इन्सान से जानवर को मानते हैं ।

10. **सिकंदर हार गया :-**

' सिकंदर हार गया ' हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार अमृतलाल नागर जीकी चुनींदा कहानियों का संकलन है । 'सिकंदर हार गया' इस कहानी का प्रथम संस्करण सन 1973 में प्रकाशित हो गया । लेखक ने 'सिकंदर हार गया' इस कहानी के नाम से प्रस्तुत कहानी संग्रह का नामकरण किया है ।अमृतलाल नागर ने इस संग्रह में चित्रित सामाजिक तथा राजनीतिक समस्या को उजागर करने की कोशिश की है । प्रेमचंद की तरह इन्होंने निम्नवर्गीय लोगों के हर पहलुको अंकीत कर समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की है ।

नागरजी ने इस कहानी संग्रह द्वारा स्वातंत्र्यपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर काल के बदलते परिवेश का चित्रण किया है । डा. नागेश राम त्रिपाठी के मतानुसार ' "अमृतलाल नागर हमारी संस्कृति के बहुरंग आयामोंसे परिचित ऐसे लेखक हैं, ' जिनकी कृतियां साहित्य और समाजशास्त्र के अध्येयताओं के लिए बरोबर, रोचक और मूल्यवान बन रहेंगी ।"[37] नागरजीने 'मरघट के' कुत्ते, 'मुल्लर की महतारी' इन कहानियों द्वारा समाज के दयनीय शोषित लोगों के यथार्थ चित्रण को अपने साहित्य में स्थान दिया हैं । भारत स्वातंत्र्य पूर्व द्वितीय विश्वयुध्द के समय अंग्रेजी राज्य में घटनेवाले अत्याचार तथा अन्याय से प्रेरित घटनाओं का चित्रण इस कहानीद्वारा दिखाया है । उनकी, 'जयपराजय, 14

एप्रिल, सती का दूसरा ब्याह' आदि नागरजी का यह कहानी संग्रह समस्या प्रधान है।

प्रस्तुत कहानी संग्रह निम्नवर्गीय लोगों के जीवनपर आधारित है। 'सिकंदर हार गया' और 'सती का दूसरा ब्याह' इन कहानियों द्वारा लेखकने नारीपर होनेवाले विविधवर्णी अत्याचारों का चित्रण किया है । इसमें बदलते हुए सामाजिक मूल्यों में भारतीय नारी ने स्वाभीमान के कारण अने स्वत्वों और पुरुषों के अत्याचारों के विरुध्द आवाज उठाई है, जो भारतीय नारी का गौरव है । नागरजी ने इन कहानियों में नारी के गौरव को सदा अक्षुण्य रखा है ।नागर ने इस संग्रह में राजनीतिक, धार्मिक, कहानियोंके साथ साथ मनोविशलेषणात्मक एवं हास्य व्यंग्यात्मक कहानीयों का सृजन किया है । मरघट के कुत्ते, जंतर मंतर इन कहानियों में लेखक ने प्रेमचंद की तरह अनपढ़ नादान लोगों के जीवन में व्याप्त रुढ़िवादिता, अंधविश्वास आदि का चित्रण करते हुए उन पर कठोर प्रहार किया है ।

इसतरह नागरजी का साहित्य जीवन के हर पहलुसे जुड़ा हुआ लगता है । उनके साहित्य का मुल्यांकन करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि उनकी कहानी का कथानक ठोस हैं ।" उन्होंने नाटकीय ढंगसे चरित्र चित्रण करने का प्रयत्न किया है । उनकी कथनात्मकता में सारल्य है । उनके पात्र यथार्थ जीवने से लिए गए हैं । उनकी कहानियां सोदेश्यपूर्ण हैं ।"[38] नागरजी की कहानी क महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि उन्होंने अपने कहानी साहित्य द्वारा मानवतावाद एवं सुधारवादी विचारोंका प्रसार किया है ।

उपन्यास साहित्य -

जीवन के सत्यों को गहन और विस्तृत रुप से प्रस्तुत करने के लिए उपन्यास सर्वाधिक उपुयक्त माध्यम है । प्रेमचंद ने उपन्यास को मानव जीवन का चित्र कहा है । उन्होंने लिखा है " मैं उपन्यासको मानव जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ । मानव समाजपर प्रकाश डालनाऔर उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूलतत्व है ।"[39] नागरजी का उपन्यास सृजन जिस भूमिका पर हुआ है, वह चाहे ऐतिहासिक रहा हो चाहे पौराणिक चाहे सामाजिक सभी में उनकी सामाजिक प्रतिबध्दता और यथार्थ बोध गहरे होकर आये हैं । नागरजी की औपन्यासिक कला का परिचय देते हुए डा. बत्रा कहती हैं " जिस मे व्यापकता एवं गहनता, बहिमुखता तथा अन्तमुर्खता के परस्पर विरोधी तत्वों को अद्भुत सम्मिश्रण है, सर्वोदय समाज को अनुप्राणित करनेवाले सन्त विनोबाकी विचारधारा से प्रेरित प्रभावीत होने का अभास देती है ।"[40]

नागरजी की औपन्यासिक कृतियां सजग सामाजिक चेतना के साथ साथ उनके विशाल अनुभवों को भी परिचायक है । नागरजी ने अपने उपन्यासों द्वारा मानवतावादी तथा लोककल्याण की व्यापक भावनाओं को उजागर किया हैं । उनकी औपन्यासिक कृतियां मानव जीवीत के अनेक पहलुओंको अंकित करती हैं । इसलिए ये कृतियां मानव जीवीत को प्रेरित कर दिल को छू लेती है । इनका उपन्यास साहित्य अन्य साहित्य विधासे बड़ा है । नागरजी की प्रकाशित निम्नलिखित 15 औपन्यासिक कृतियां हैं ,

1.	महाकाल	1947
2.	सेठ बाँकेमल	1955
3.	शतरंज के मोहरे	1958
4	बूंद और समुद्र	1956
5.	सुहाग के नुपूर	1960
6	अमृत और विष	1966
7.	सात घूंघटवाला मुखडा	1968
8.	एकदा नैमिष्यारण्ये	1971
9.	मानस का हंस	1972
10.	नाच्यौ बहुत गोपाल	1978
11.	खंजन नयन	1981
12	बिखरे तिनके	1982
13.	आग्निगर्भा	1983
14.	करवट	1985
15.	पिढ़ियाँ	1990

नाटक

1. युगावतार
2. नुक्कड़पर
3. बात की बात (प्रहसन)

4. परित्याग

5. चमकदार सिढ़ियां

6 उतार चढाव

7 चंदनवन रेडियो एकांकी

8. चढेन न दूजो रंग

जीवनी

1 चैतन्य महाप्रभू

संस्मरण

1 जिनके साथ जिया ।

सर्वेक्षण कार्य

1 गदर के फूल

2. ये कोठेवालियां

व्यंग्य वार्ताए

1. कृपया दायें चलिए ।

अमृतलाल नागरजी सृजनशील प्रतिभा का दायरा छोटा नही है । उपन्यास और कहानी की बात यदि एक किनारे छोड़ दी जाये तो भी वे नाटक, संस्मरण, रेखाचित्र, व्यंग्य वार्ता प्रहसन की ओर भी बढ़ते दिखाई देते हैं ।

समग्रतः नागरजी अपनी बहुआयामी प्रतिभाको विविध रुपो में रुपायित किया है । सर्वेक्षण कार्य के द्वारा उनके अदम्य कौतुहल, साहस, संवदेनशीलता और मानवता के दर्शन होते हैं । नाटय सृजन उनक रचनात्मक प्रतिभा का अनुठा आयाम

है ।, जिसके द्वारा घटनाओंका संयोजन और उर्वर कल्पनाशिलता का अनोखा समंजस्य हुआ है । इसी प्रकार जीवन के कण-कण से बटोरी जानेवाली अनुभूतियों और पग पग पर होने वाले अनुभवों का अंकन रेखाचित्रों और वार्ताओं और संस्मरणो के रुपमें आतीहैं । दूसर भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं से हिंदी जगत का परिचय भी उन्होंने अनुवाद के द्वारा किया है ।

"अतएव हिन्दी गद्यकी सभी विधाएं नागर की लेखनी का संस्पर्श पाकर जीवन्त और स्पन्दनशील हो उठी है ।"[4] नागरजीने साहित्य को स्वस्थ दृष्टि दी है । उन्होंने प्रत्येक वर्ग के जीवन बहुत निकटता से देखा है । इसलिए उनका साहित्य सभी दृष्टियों से संपन्न और सदृढ़ हो गया है ।

निष्कर्ष :-

नागरजी का साहित्य सागर की तरह विशाल एवं गहरा है । उन के व्यक्तित्व की तरह उनका साहित्यसृजन बहुमुखी है । उन्होंने उपन्यास एवं कहानी साहित्य के बावजूद अन्य विधाओं का भी सृजन किया है, जो महत्वपूर्ण है । विशेषतः उनका कहानी साहित्य उल्लेखनीय है । लखनऊ के अनेक पलुओं को अंकीत करने की कोशिश की है । उन्होंने अपने कौशल्य से अपने परिवेश समाज और व्यक्तियों को साहित्य से बांध लिया है । उनकी भाषाशैली की विविधता के साथ साथ किस्सागोई उनका प्रमुख विशेषता है, जो पाठकों में रुचि एवं रोचकता पैदा करती हैं ।

नागरजी एक सफल कहानीकार है ।उनकी कहानी कला अपनी स्वतंत्र सत्ता रखती है । प्रेमचंदीय परम्परा को उन्होंने खुलापन दिया है । और नवीन

आंतरीक मनोविश्लेषणों में न फँसकर समाज और जीवन के पहलु को सरल अभिव्यक्ति दी है । किन्तु मुख्य रुपसे उनकी कहानियां जिन्दा दिल की प्रतीक हैं । लखनऊ की बहुरंगी धरती ने उनकी रचना प्रतिभा को भी विविधरंगो चित्रित किया है । नागरी ने अपनी कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं, प्रसंगोपर आधारित कथाओंका सन्निवेश किया है । निम्नवर्गीय समजामें चित्रित अन्धविश्वास, रुढ़ि परम्परा एवं समस्याओं को अपने साहित्य द्वारा मिटाने की कोशिश की है ।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व के समग्र अध्ययनोपरांत नागर साहित्यके शिल्प इस तथ्य को प्रमाणित करता है, कि नागर का शिल्प वस्तु और संदर्भो का सहचर है । कथ्य वजनी हो या हल्का शिल्प तदनुरुप होना आवश्यक है । नागर मूलतः उपन्यासकार और वर्णन और विवरण प्रिय कथाकार हैं । यह कारण है कि उनके कथासाहित्य शिल्प में ये दोनों प्रवृत्तियां बरोबर मिलती हैं ।

संदर्भ सूची

1. स्नातक विजयेंद्र - चिंतन के क्षण - पृ. 8
2. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 3
3. डा.त्रिपाठी नागेश राम - अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन पृ. 40
4. चौबे देवेंद्र - कथाकार अमूतलाल नागर - पृ. 13
5. नागर अमृतलाल - ये कोठेवालियां - पृ. 13
6. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एव सिध्दांत पृ. 5
7. चौबे देवेद्र - कथाकार अमृतलाल नागर - पृ. 20
8. वही पृ. 21
9. चौबे देवेंद्र - कथाकार अमृतल नागर - पृ. 14
10. डा.त्रिपाठी नागेशराम-अमृतलाल नागरके उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन पृ. 29
11. डा.त्रिपाठी नागेशराम-अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन पृ.29
12. वही पृ. 30
13. नागर अमृतलाल-ये कोठेवालीयाँ पृ. 75
14. वही भूमिका पृ. 71
15. सारिका पृ. 16-1985. पृ. 71
16. चौबे देवेद्र-कथाकार अमृतलाल नागर पृ. 26
17. डा.बत्रा सुदेश अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दात पृ. 15
18. वही पृ. 15.16
19. डा.त्रिपाठी नागेशराम - अमृतलाल नागरके उपन्यासो का समाजशास्त्रीय अध्ययन पृ. 33
20. डा.बत्रा सुदेश-अमृतलाल नागर व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ.6

21. नागर अमृतलाल - मेरी प्रिय कहानियां - मुखपृष्ठ से उद्धृत ।

22. डा.त्रिपाठी नागेश राम - अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन पृ.98

23. डा.बत्रा सुदेश अमृतलाल नागर:व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 182

24. डा.बत्रा सुदेश_अमृतलाल नागर:व्यक्तित्व कृतीत्व एवं सिध्दात पृ. 333

25. नागर अमृतलाल - तुलाराम शास्त्री - पृ. 34

26. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 217

27. नागर अमृतलाल एटम बम पृ. 6

28. डा.बत्रा सुदेश अमृतलाल नागर:व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत

29. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर:व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 187

31. नागर अमृतलाल-मेरी प्रिय कहानियां आवरण पृष्ठ से उद्धृत ।

32. नागर अमृतलाल - पांचवा दस्ता और अन्य सात कहानियां पृ. 123

33. वहीं - पृ. 97

34. वही पृ.78

35. वही पृ. 115

36 वही पृ. 75

37. डा.त्रिपाठी नागेशराम - अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन पृ.98

38. डा.राय सुभेदार - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का विकास पृ. 87

39. प्रेमचंद - साहित्य का उदद्देश्य - पृ. 60

40. डा.त्रिपाठी नागेशराम - अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन -50

41. डा.बत्रा सुदेश - अमृतलाल नागर - व्यक्तित्व कृतित्व एवं सिध्दांत पृ. 249